गज़ल

जमाने को खबर क्या है यहां क्या बात मिलती है
फकत सजदे में सतगुरू के इलाही बात मिलती है

1–यह वोह दर है यहां भेद नहीं जाति पाति का
यहां पर सोई आत्म को निजघर की बात मिलती है

2– यहां पर सुख अर्श के मिलते हैं मुतलकी होकर
हुई महबूब की नजरें करम रूह की नजर खुलती है

3– खुले जो रूह की नजरें मिलें तब प्राणों के प्रीतम
मेरा दिल अर्श है तेरा कली तब रूह की खिलती है

4– पिया के चाहने वालों न भटको सब इधर आओ
मेरे प्रीतम की रहमत से हक की जात मिलती है